Refer Last Page for Realisation

15-10-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

“मीठेबच्चे - आत्मा रूपी बैटरी 84 मोटरों में जाने के कारण डल हो गई है, अब उसे याद की यात्रा से भरपूर करो"

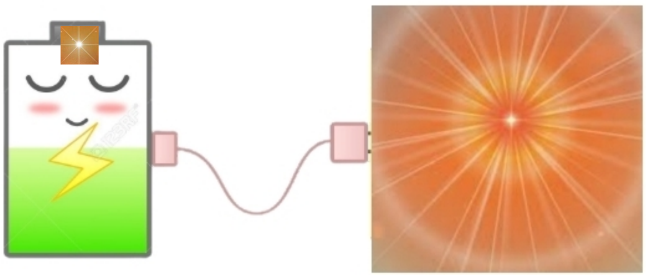

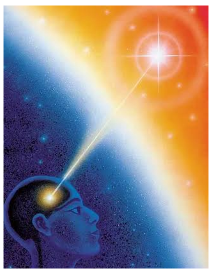

प्रश्नः- बाबा किन बच्चों को बहुत-बहुत भाग्यशाली समझते हैं?

उत्तर:- जिनके पास कोई झंझट नहीं है, जो निर्बन्धन हैं, ऐसे बच्चों को बाबा कहते तुम बहुत-बहुत भाग्यशाली हो, तुम याद में रहकर अपनी बैटरी फुल चार्ज कर सकते हो। अगर योग नहीं सिर्फ ज्ञान सुनाते तो तीर लग नहीं सकता। भल कोई कितना भी भभके से अपना अनुभव सुनाये लेकिन खुद में धारणा नहीं तो दिल खाता रहेगा।

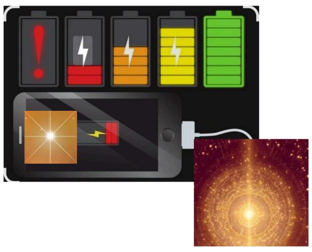

ओम् शान्ति। मीठे-मीठे रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप समझाते हैं। रूहानी बाप का नाम क्या है?

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

15-10-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

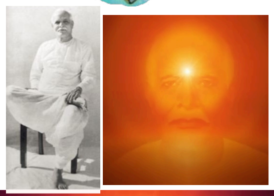

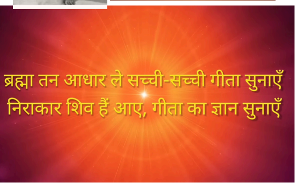

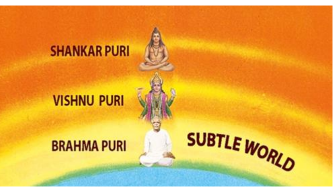

शिवबाबा। वह है ही भगवान, बेहद का बाप। मनुष्य को कभी बेहद का बाप अथवा ईश्वर वा भगवान नहीं कहा जा सकता। नाम भल बहुतों के शिव हैं परन्तु वह सब देहधारी हैं इसलिए उनको भगवान नहीं कहा जा सकता। यह बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं। मैंने जिसमें प्रवेश किया है, उनका यह बहुत जन्मों के अन्त का जन्म है। तुम बच्चों से कई पूछते हैं - तुम इनको भगवान क्यों कहते हो? बाप पहले से ही समझाते हैं - कोई भी स्थूल वा सूक्ष्म देहधारी को भगवान नहीं कह सकते। सूक्ष्म देहधारी सूक्ष्मवतनवासी ही ठहरे। उन्हों को देवता कहा जाता है। ऊंच ते ऊंच है ही भगवान, परमपिता। ऊंच ते ऊंच उनका नाम है।उनके रहने का स्थान पर ऊंचे ते ऊंचा परमधाम है, बाप सभी आत्माओं सहित वहाँ निवास करते हैं। बैठक भी ऊंच है। वास्तव में कोई बैठने की जगह नहीं है। जैसे स्टॉर कहाँ बैठेहैं क्या? खड़े हैं ना। तुम आत्मायें भी अपनी ताकत से वहाँ खड़ी हो। ताकत ऐसी मिलती है जो वहाँ जाकर खड़े होते हैं। बाप का नाम ही है सर्वशक्तिमान्, उनसे शक्ति

ऊँचे ऊँचे मंदिर तेरे ऊँचा तेरा धाम,
हे कैलाश के वासी भोले,
हम करते है तुझे प्रणाम

अद्भुत है संसार यहाँ पर कई भूलेखे है,
तरह तरह के खेल जगत मे हमने देखे है,
तू है भाग्य विधाता तेरे लेख सुलेखे है,
तू लिखने वाला है ये सब तेरे लेखे है
अजबहै तेरी माया,
इसे कोई समझ ना पाया ॥

पारब्रह्म परमेश्वर तू है हर कोई माने रे,
सब तेरे बालक है क्या अपने बेगाने रे,
तू अंतर्यामी सबकी पीडा पहचाने रे,
सबके ही हृदय मे बैठा घट घट की जाने रे,
अजबहै तेरी माया,
इसे कोई समझ ना पाया

हे योगेश्वर योग से तुने जगत बनाया है,
तन पे तूने भस्म रमा के अलख जगाया है,
कही धुप के रंग सुनहरे कही पे छाया है,
तूने किया है वही जो तेरे मन को भाया है,
अजब है तेरी माया,
इसे कोई समझ ना पाया

मिलती है। आत्मा उसको याद करती है, बैटरी चार्ज हो जाती है। जैसे मोटर में बैटरी होती है, उसके ज़ोर से ही मोटर चलती है। बैटरी में करेन्ट भरी हुई होती है फिर चलते-चलते वह खाली हो जाती है फिर बैटरी मेन पावर से चार्ज कर मोटर में डालते हैं। वह होती हैं हद की बातें। यह है बेहद की बात। तुम्हारी बैटरी तो 5 हज़ार वर्ष चलती है। चलते-चलते फिर ढीली हो जाती है। मालूम पड़ता है - एकदम खत्म नहीं होती है, कुछ न कुछ रहती है। जैसे टार्च में डिम हो जाती है ना। आत्मा तो है ही इस शरीर की बैटरी। यह भी डल हो जाती है। बैटरी इस शरीर से निकलती भी है फिर दूसरी, तीसरी मोटर में जाकर पड़ती है। 84 मोटरों में उनको डाला जाता है तो अब बाप कहते हैं तुम कितने डलहेड पत्थरबुद्धि बन गये हो। अब फिर अपनी बैटरी को भरो। सिवाए बाप की याद के आत्मा कभी पवित्र हो नहीं सकती। एक ही सर्वशक्तिमान् बाप है, जिनसे योग लगाना है। बाप खुद अपना परिचय देते हैं कि मैं क्या हूँ, कैसा हूँ। कैसे तुम्हारी आत्मा की बैटरी डल हो जाती है।

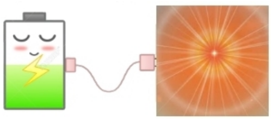

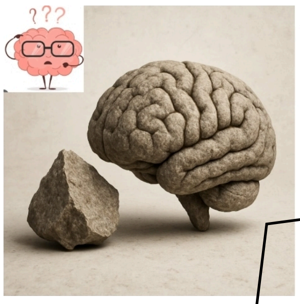

One & Only way

अब तुमको राय देता हूँ मेरे को याद करो तो बैटरी सतोप्रधान फर्स्ट-क्लास हो जायेगी। पवित्र बनने से आत्मा 24 कैरेट बन जाती है। अभी तुम मुलम्मे के बन गये हो। ताकत बिल्कुल खत्म हो गई है। वह शोभा नहीं रही है। अब बाप तुम बच्चों को समझाते हैं बच्चे मुख्य बात है योग में रहना, पवित्र बनना। नहीं तो बैटरी भरेगी नहीं। योग लगेगा नहीं। भल कुक्कड़ ज्ञानी तो बहुत हैं। ज्ञान भल देते हैं परन्तु वह अवस्था नहीं है। यहाँ बड़े भभके से अनुभव सुनाते हैं। अन्दर खाता रहता है। मैं जो वर्णन करता हूँ ऐसी अवस्था तो है नहीं। कई फिर योगी तू आत्मा बच्चे भी हैं। बाप तो बच्चों की बहुत महिमा करते हैं। बाप कहते हैं - बच्चे, तुम बहुत-बहुत भाग्यशाली हो। तुमको तो इतने झंझट नहीं। जिसको बच्चे जास्ती होते हैं उनको बंधन भी होता है। बाबा (Brahma) को कितने ढेर बच्चे हैं। सबकी सम्भाल देख-रेख करनी पड़ती है। बाबा को भी याद करना है। माशूक की याद तो बिल्कुल पक्की होनी चाहिए। भक्ति मार्ग में तो तुम बाप को कितना याद करते आये हो - हे भगवान, पूजा भी

याद करो...

पहले-पहले उनकी करते हो। पहले निराकार भगवान की ही करते हैं। ऐसे नहीं कि उस समय तुम आत्म-अभिमानी बनते हो। आत्म-अभिमानी फिर पूजा थोड़ेही करेंगे।

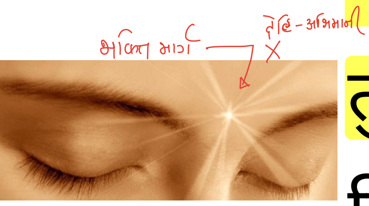

बाप समझाते हैं पहले-पहले भक्ति शुरू होती है तो पहले एक बाप की पूजा करते हैं। एक ही शिव की पूजा करते हैं। यथा राजा-रानी तथा प्रजा। ऊंच ते ऊंच है ही भगवान, उनको ही याद करना है। दूसरे जो भी सब नीचे हैं - ब्रह्मा-विष्णु-शंकर को भी याद करने की दरकार नहीं है। ऊंच ते ऊंच बाप को ही याद करना है। परन्तु ड्रामा का पार्ट ऐसा है जो तुम नीचे उतरने के लिए बांधे हुए हो। बाप समझाते हैं तुम कैसे नीचे उतरते हो। हर बात आदि से अन्त तक ऊपर से नीचे तक बाप समझाते हैं। भक्ति भी पहले सतोप्रधान फिर सतो-रजो-तमो होती है। अभी तुम फिर सतोप्रधान बन रहे हो, इसमें ही मेहनत है। पवित्र बनना है। अपने को देखना है,

Most imp
Point to ponder deeply...

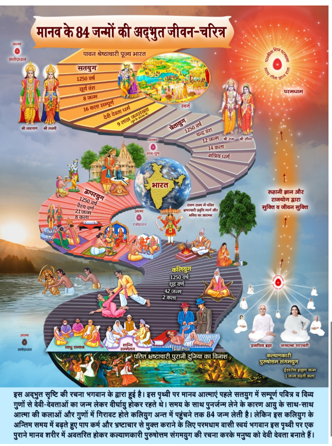

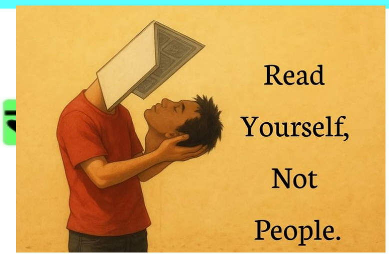

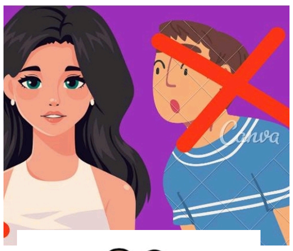

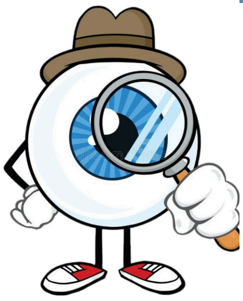

माया कहाँ धोखा तो नहीं देती है? मेरी क्रिमिनल आई तो नहीं बनती है? कोई पाप का ख्याल तो नहीं आता है? गायन है प्रजापिता ब्रह्मा तो उनकी सन्तान ब्राह्मण-ब्राह्मणियां बहन-भाई ठहरे ना। यहाँ के ब्राह्मण लोग भी अपने को ब्रह्मा की औलाद कहलाते हैं। तुम भी ब्राह्मण भाई-बहन हुए ना। फिर विकारी दृष्टि क्यों रखते हो। ब्राह्मणों को तुम अच्छी रीति दृष्टि दे सकते हो। अभी तुम बच्चे ही जानते हो ब्रह्मा की सन्तान ब्राह्मण-ब्राह्मणी बनकर फिर देवता बनते हैं। कहते भी हैं बाप आकर ब्राह्मण देवी-देवता धर्म की स्थापना करते हैं। यह समझ की बात है ना। हम ब्रह्मा की सन्तान भाई-बहन हो गये तो कुदृष्टि कभी नहीं जानी चाहिए। उनको रोकना है। यह भी हमारी मीठीबहन है। वह लव रहना चाहिए। जैसे ब्लड कनेक्शन में लव रहता है, वह बदलकर रूहानी बन जाए। इसमें बहुत-बहुत मेहनत है। है भी सहज याद। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है। विकार की दृष्टि नहीं रख सकते। बाबा ने समझाया है - यह आंखें बहुत धोखा देने वाली हैं,

15-10-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

उनको बदलना है। हम आत्मा हैं। अभी तो हम शिवबाबा के बच्चे हैं। एडाप्ट किये हुए भाई-बहन हैं। हम अपने को बी.के. कहलाते हैं। चलन में फ़र्क तो रहता है ना। टीचर्स का काम है क्लास में सबसे पूछना - तुम समझते हो हमारी भाई-बहन की दृष्टि रहती है या कुछ चंचलता चलती है? सच्चे बाप के आगे सच न बताया, झूठ बोला तो बहुत दण्ड पड़ जायेगा। कोर्ट में कसम उठाते हैं ना। सच्चे ईश्वर बाप के आगे सच कहेंगे। सच्चे बाप का बच्चा भी सच्चा होगा। बाप ट्रूथ है ना। वह सत्य ही बतलाते हैं। बाकी सब हैं गपोड़े। श्री श्री 108 अपने को कहलाते हैं, वास्तव में यह तो माला है ना, जो सिमरते हैं। यह भी जानते नहीं कि हम क्यों सिमरते हैं। बौद्धियों की भी माला,क्रिश्चियन की भी माला होती है। हर एक अपने ढंग से माला फेरते हैं। तुम बच्चों को अब ज्ञान मिला हुआ है। बोलो, 108 की जो माला है उसमें ऊपर में फूल तो है निराकार। उनको ही सब याद करते हैं। उनकी याद से ही हम स्वर्ग की पटरानी अर्थात् महारानी बनते हैं। नर से नारायण, नारी से लक्ष्मी बनना -

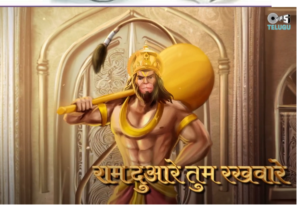

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

यह है सूर्यवंशी मखमल की पटरानी बनना फिर खादी की हो जाती है। तो ऐसी-ऐसी प्वाइंट्स बुद्धि में रख फिर समझाना चाहिए। फिर तुम्हारा नाम बहुत बाला हो जायेगा। बात करने में शेरनी बनो। तुम शिव शक्ति सेना हो ना। अनेक प्रकार की सेनायें हैं ना। वहाँ भी तुम जाकर देखो क्या सिखलाते हैं। लाखों मनुष्य जाते हैं। बाबा ने समझाया है - क्रिमिनल आई बहुत धोखा देने वाली है। अपनी अवस्था का वर्णन करना चाहिए। अनुभव सुनाना चाहिए - हम घर में कैसे रहते हैं? अवस्था पर क्या असर पड़ता है? डायरी रखो - कितना समय इस अवस्था में रहता हूँ? बाप समझाते हैं रूसतम से माया भी रूसतम होकर लड़ती है। युद्ध का मैदान है ना। माया बड़ी बलवान है। माया अर्थात् 5 विकार। धन को सम्पत्ति कहा जाता है, जिसके पास जास्ती सम्पत्ति होती है, अजामिल भी जास्ती वह बनते हैं।

ये पक्का समझ लो..

3rd most Powerful

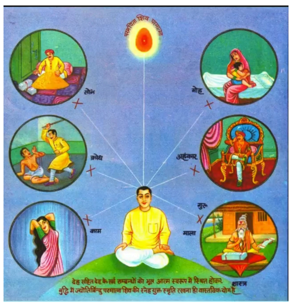

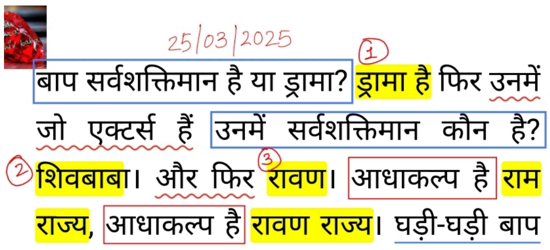
25/03/2025
बाप सर्वशक्तिमान है या ड्रामा? (1) ड्रामा है फिर उनमें जो एक्टर्स हैं उनमें सर्वशक्तिमान कौन है? (2) शिवबाबा। और फिर (3) रावण। आधाकल्प है राम राज्य, आधाकल्प है रावण राज्य। घड़ी-घड़ी बाप

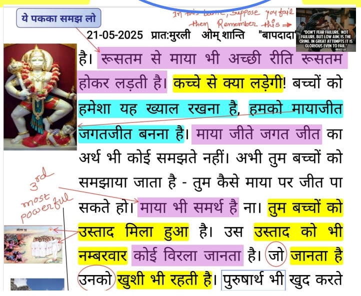
ये पकका समझ लो
In this battle, suppose you fail then Remember this ⇒
21-05-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा"
"DON'T FEAR FAILURE. NOT FAILURE, BUT LOW AIM, IS THE CRIME. IN GREAT ATTEMPTS IT IS GLORIOUS EVEN TO FAIL."
है। रूसतम से माया भी अच्छी रीति रूसतम होकर लड़ती है। कच्चे से क्या लड़ेगी! बच्चों को हमेशा यह ख्याल रखना है, हमको मायाजीत जगतजीत बनना है। माया जीते जगत जीत का अर्थ भी कोई समझते नहीं। अभी तुम बच्चों को समझाया जाता है - तुम कैसे माया पर जीत पा सकते हो। माया भी समर्थ है ना। तुम बच्चों को उस्ताद मिला हुआ है। उस उस्ताद को भी नम्बरवार कोई विरला जानता है। जो जानता है उनको खुशी भी रहती है। पुरुषार्थ भी खुद करते
3rd most powerful

बाप कहते हैं - पहले-पहले तुम वेश्याओं को तो

बचाओ। तो वह फिर अपनी एसोसिएशन बनायेंगी। हमको तो बाप से वर्सा लेना है। बाप कहते हैं मैं तुमको शिवालय का मालिक बनाने आया हूँ। यह अन्तिम जन्म है। वेश्याओं को समझाना चाहिए - तुम्हारे नाम के कारण भारत की इतनी आबरू (इज्जत) गई है। अब बाप आये हैं शिवालय में ले चलने। हम श्रीमत पर आये हैं तुम्हारे पास। अभी तुम विश्व की मालिक बन जाओ। भारत का नाम बाला करो, हमारे मुआफिक। हम भी बाप को याद करने से पवित्र बन रहे हैं। तुम भी यह एक जन्म छी-छी काम छोड़ दो। रहम तो करना है ना। फिर तुम्हारा नाम बाला बहुत हो जायेगा। कहेंगे इनमें तो ऐसी ताकत है जो ऐसा गन्दा धंधा इनसे छुड़ा दिया। सबकी एसोसिएशन है। तुम अपनी एसोसिएशन बनाकर गवर्मेन्ट से जो मदद चाहे ले सकती हो। तो अब ऐसे छी-छी जिन्होंने भारत का नाम बदनाम किया है, उन्हों की सेवा करो। तुम्हारी भी युनियन बहुत पक्की चाहिए। जो 10-12 आपस में मिलकर जाए समझायें। मातायें भी अच्छी हों।

Tell this to Prostitutes

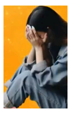

कोई नया युगल हो, बोले हम पवित्र रहते हैं। पवित्र रहने से ही विश्व के मालिक बनते हैं। तो क्यों नहीं पवित्र बनेंगे। सारा झुण्ड का झुण्ड जाये। बड़ी नम्रता से जाकर कहना है, हम आपको परमपिता परमात्मा का पैगाम देने आये हैं। अब विनाश सामने खड़ा है। बाप कहते हैं मैं सबका उद्धार करने आया हूँ। तुम भी यह एक जन्म विकार में मत जाओ। तुम समझा सकते हो हम ब्रह्माकुमार-कुमारियां अपने ही तन-मन-धन से सर्विस करते हैं। हम भीख तो मांगते नहीं। ईश्वर के बच्चे हैं। ऐसे-ऐसे प्लैन बनाओ। ऐसे नहीं कि तुम मदद नहीं कर सकते हो। ऐसा काम करो जिसमें वाह-वाह हो। हज़ारों मदद देने वाले निकल आयेंगे। यह अपना संगठन बनाओ। मुख्य-मुख्य को चुनो, सेमीनार करो। बच्चों को सम्भालने वाले तो बहुत निकल सकते हैं। तुम ईश्वरीय सर्विस में लग जाओ। ऐसी फ्राकदिल होनी चाहिए जो झट सर्विस पर निकल पड़े। एक तरफ यह सर्विस और दूसरी बात गीता की, इन बातों को मिलकर उठाओ। तुम पढ़ते ही हो यह लक्ष्मी-नारायण बनने

के लिए। तो यहाँ तुम बच्चों का आपस में मत-भेद नहीं रहना चाहिए। अगर कोई बात बाप से छिपाते हो, सच नहीं बताते हो तो भी अपना ही नुकसान करते हो और ही सौगुणा पाप चढ़ जाता है। अच्छा!

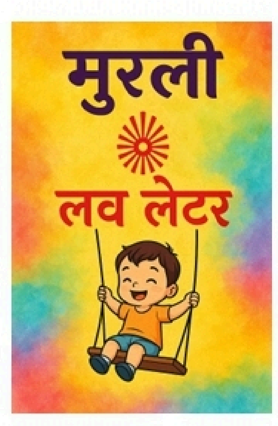

मीठे-मीठेसिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) हम मीठेबाप के बच्चे हैं, आपस में मीठे बहन-भाई होकर रहना है। कभी भी विकार की दृष्टि नहीं रखनी है। दृष्टि में कोई भी चंचलता हो तो रूहानी सर्जन को सच बताना है।

2) कभी भी आपस में मतभेद में नहीं आना है। फ्राकदिल बन सर्विस करनी है। अपने तन-मन धन से, बहुत-बहुत नम्रता से सेवा कर सबको बाप का परिचय (पैगाम) देना है।

15-10-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वरदान:- हर कर्म चरित्र के रूप में गायन योग्य बनाने वाले महान आत्मा भव

Definition of महान आत्मा वह है जिसका हर संकल्प, हर कर्म महान् हो।

एक भी संकल्प साधारण व व्यर्थ न हो। कोई भी कर्म साधारण व बगैर अर्थ न हो।

कर्मेन्द्रियों द्वारा जो भी कर्म हो वह अर्थ सहित हो, समय भी महान कार्य में सफल होता रहे, तब हर चरित्र गायन योग्य होगा।

Then only

महान आत्माओं का ही यादगार हर्षित मूर्त, आकर्षण मूर्त और अव्यक्त मूर्त के रूप में है।

स्लोगन:- मान की इच्छा छोड़ स्वमान में टिक जाओ तो मान परछाई के समान पीछे आयेगा।

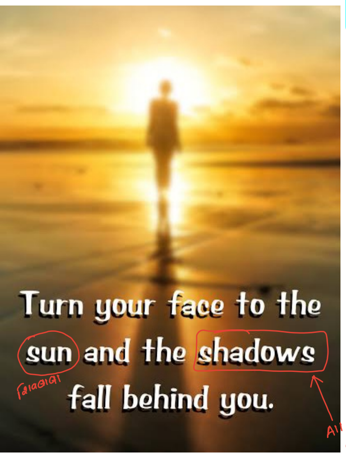

Always Think :

Points: ज्ञान योग धारणा

अव्यक्त इशारे -

स्वयं और सर्व के प्रति

मन्सा द्वारा योग की शक्तियों का प्रयोग करो

कोई भी स्थूल कार्य करते हुए मन्सा द्वारा वायब्रेशन्स फैलाने की सेवा करो।

जैसे कोई बिजनेसमेन है तो स्वप्न में भी अपना बिजनेस देखता है,

ऐसे आपका काम है - विश्व-कल्याण करना।

यही आपका आक्यूपेशन है, इस आक्यूपेशन को स्मृति में रख सदा सेवा में बिजी रहो।

यदि सेवा का फल मिल जाये तो मायाजीत सहज बन जायेंगे इसलिए जब भी बुद्धि को फुर्सत मिले तो सेवा में जुट जाओ।

Hence, We are invincible since

सदा अचल-अडोल रहते हो? कल्प पहले भी रावण सेना ने हिलाने की कोशिश की लेकिन अंगद अचल रहे। परिस्थितियाँ आयेंगी और चली जायेंगी, स्वस्थिति सदा आगे बढ़ायेगी। परिस्थिति के पीछे भागने से स्वस्थिति चली जायेगी। कोई भी परिस्थिति आये तो आप हाई जम्प दो, इससे पार हो जायेंगे। परिस्थिति आना भी गुड-लक है। यह पेपर फाउन्डेशन को मज़बूत करने का साधन है। यह निश्चय को हिलाकर देखने के लिए आते है। एक बारी अंगद समान मज़बूत हो जायेंगे तो यह नमस्कार करेंगे। पहले विकराल रूप से आयेंगे और फिर दासी रूप से आयेंगे। चैलेन्ज करो हम महावीर हैं। पानी के ऊपर लकीर ठहरती है क्या? आप मास्टर ज्ञान सागर के उपर कोई परिस्थिति वार कर नहीं सकती। लकीर डाल नहीं सकती।

63

Come on.. Shake me, If you Can..

Point to be Noted

समझा?

ये पक्का समझ लो..

15/10/25

(26.11.1979)

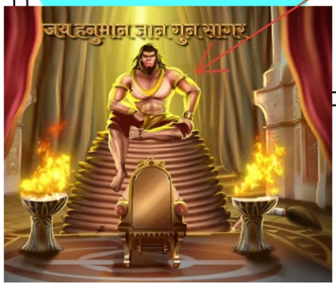

Come on.. Shake me, If you Can..

7.5 मर्यादाओं का पालन करो :

(अ) अमृतवेले से लेकर रात तक की मर्यादापूर्वक जीवन को अच्छी तरह से जानते हो। उसी प्रमाण चलना — यही पुरुषोत्तम बनना है। जब नाम ही है पुरुषोत्तम अर्थात् सर्व साधारण पुरुषों से उत्तम, तो चेक करो कि हम श्रेष्ठ आत्माओं की पहली मुख्य बात — स्मृति उत्तम है? स्मृति उत्तम है तो वृत्ति और दृष्टि, स्थिति स्वत: ही श्रेष्ठ है। स्मृति की मर्यादा को जानते हो? मैं भी श्रेष्ठ आत्मा और सर्व भी एक बाप की श्रेष्ठ आत्मायें हैं। वैरायटी आत्मायें, वैरायटी पार्ट बजाने वाली हैं। यह

15/10/25

Not only in सिमरण

But in Realisation

सारे दिन के लिए तैयारी — अमृतवेले से

पहला पाठ नेचुरल रूप में स्मृति-स्वरूप में रहे। देह को देखते भी आत्मा को देखें। यह समर्थ स्मृति हर सेकेण्ड स्वरूप में आये, स्मृति स्वरूप हो जाये। सिर्फ सिमरण न हो कि मैं भी आत्मा, यह भी आत्मा लेकिन मैं हूँ ही आत्मा, यह भी है ही आत्मा। इस पहली स्मृति की मर्यादा स्वयं को सदा निर्विघ्न बनाती और औरों को भी इस श्रेष्ठ स्मृति के समर्थपन के वायब्रेशन फैलाने के निमित्त बन जाते हैं, जिससे और भी निर्विघ्न बन जाते हैं।

इसे सिर्फ देखना नहीं है,
किन्तु अनुभव करना है।

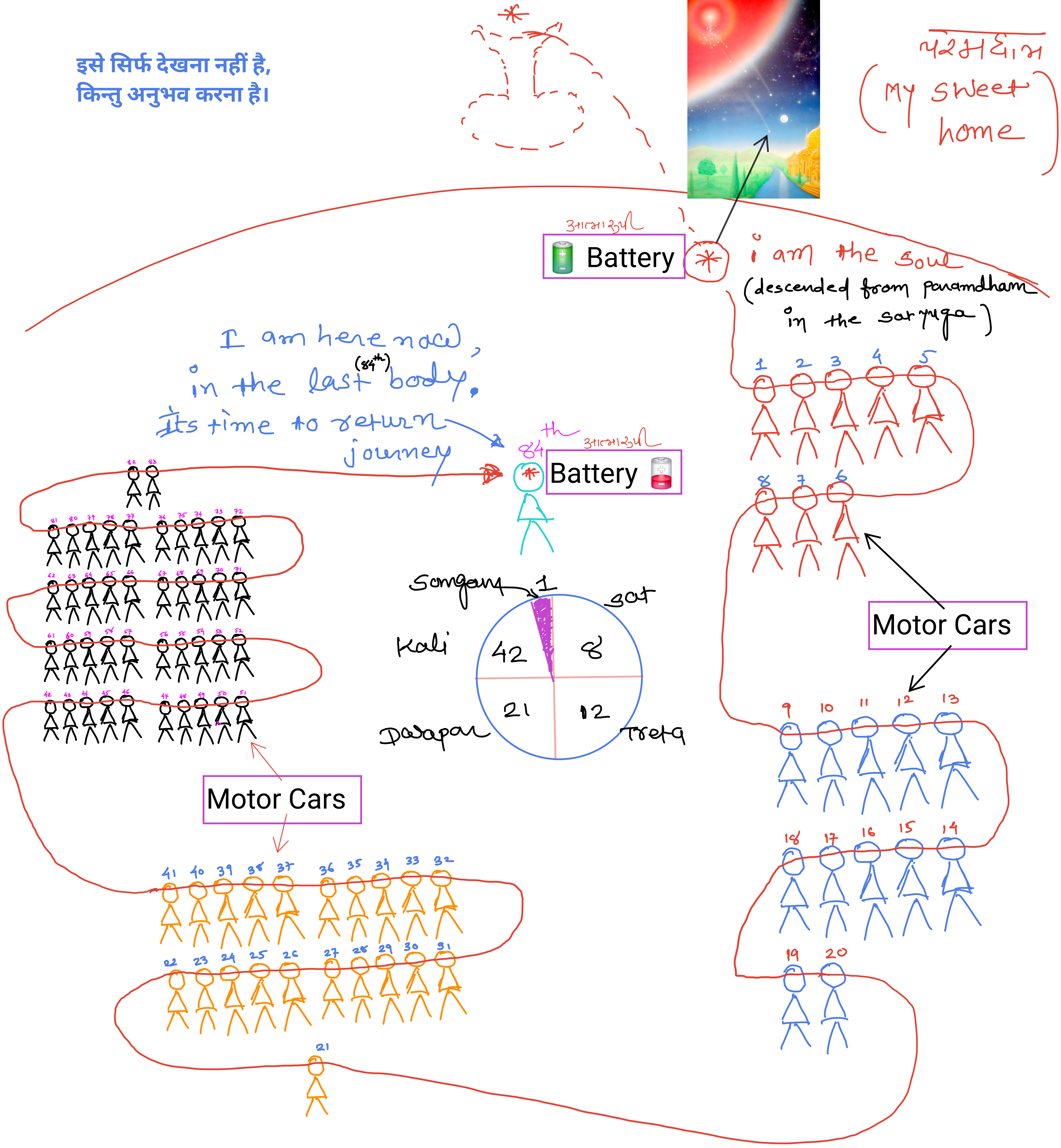

I (the sparkling soul) am same throughout all 84 costumes (male & female both).

I am immortal, eternal, imperishable. The costumes are perishable.

Geeta Adhyay: 2

न जायते म्रियते वा कदाचि नायं भूत्वा भविता वा न भूय: | अजो नित्य: शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे || 20|| shloka

The soul is neither born, nor does it ever die; nor having once existed, does it ever cease to be. The soul is without birth, eternal, immortal, and ageless. It is not destroyed when the body is destroyed.

It's very long journey we have. Now, its time to return in our sweet silence home to rest in the lap of our sweet father shiva.